श्री चतुर्दशि ग्रंथ
आर्थानुसंधान
जीव हॊम प्रकरण
(य़ज्ञद सामग्रि:समित्तु-धूम-अर्चि-अंगार-विस्पुलिंग)
नारायण - प्रथमाग्नि
"एल्लवन्नू स्वीकार माडुवव मत्तु अंगगळिगेल्ला ओडेयनागिद्दाने"
आद्दरिंद अग्नि एनिसिद्दाने.
व्याप्ति: आदित्य मंडल
व्यापार: प्राणिगळिंद मादल्पट्ट कर्म समूहवन्नु तेगेदुकोंडु
हॊगुवुदरिंद आदित्यनामकनु

नारयण-नारायण-समित्तु
व्याप्ति:आदित्य मंडल
व्यापर:"समॆधनात्" - अग्निवृद्दिगे हागू मॆधाशक्तिगे
कारणनागिद्दाने - आतनन्नु ई रीति नेनेदवरिगू मॆधा शक्ति
वृद्दिपडिसुत्ताने

नारायण - नारायणन ई रूपक्के नमॊनम:

नारायण - वासुदॆव - "धूम"

व्याप्ति: रश्मियल्लिरुत्ताने - रश्मिनामकनु, रतिरूप - सुखरूप - क्रीडारूपनु "रति शं मान रूपत्वात्"
व्यापार:"धूत्करणात्’ - अज्ञानादिगळन्नु शत्रुगळन्नु निराकरण माडुत्ताने . ई रीति नेनेदवर अज्ञानादिगळन्नू मत्तु शतृगळन्नु निराकरण माडुत्ताने.
ई भगवंतन नारायण - वासुदेव रूपगळिगे नमोनम:

नारायण - संकर्षण - अर्चि (ज्वाले)
अरंचितत्वात्:अर्चिनामकनु
व्याप्ति: अहस्सिनल्लि (हगलिनल्लि)
व्यापार:"तमसा अहननीयत्वात्" तमस्सन्नु - अज्ञानवन्नु परिहार माडुत्तानाद्दरिंद अहर्नामकनु .
ई रीति नेनेदवर अज्ञानवन्नु परिहार माडुत्ताने. आ भगवद्रूपगळिगे नमोनम:

नारायण - प्रद्युम्न - अंगार "आह्लाद रूपत्वात्"
व्याप्ति : चंद्रनल्लि - चंद्रनामकनु
व्यापर : "अंगरतेः" - अंगांगगळल्लि क्रीडिसुत्ताने. चिंतने माडिदवरिगू आह्लादवन्नु कोडुत्ताने. आ भगवद्रूपक्के नमोनम:

नारायण - अनिरुद्ध - विस्पुलिंग (किडि)

व्याप्ति : नक्षत्रदल्लि - नक्षत्र - नक्षत्रनामकनु
"नविद्यते क्षत्रं पालकॊयस्यॆति" - इवनॆ एल्लरिगू रक्षक - अन्यरक्षरहित
व्यापर : "विविधं स्पुरणात्"
मत्स्यादि रूपगळिंद विधविध प्रादुर्भाव होंदुवनु - चिंतने माडिदवरिगे नानारीति तॊरुत्ताने - आ भगवद्रूपगळिगे नमॊनम:

दॆवतेगळु ई रीति जीवनन्न नारायणादि पंच रूपात्मक - समित्तु मोदलाद पंचरूपगळल्लि नारायणनेंब प्रथमाग्नियल्लि हॊम माडि चंद्रन मूलक बंदु पर्जन्याग्नियल्लि हॊम

२. वासुदॆव - पर्जन्यनामक , पर्जन्य = ब्रह्मादिगळिगे इवनिंद हुट्टिदे.

वासुदॆव - नारायण - वायुनामक समित्तु
"ज्ञानाय रूपत्वात्"
व्याप्ति : वायु
व्यापार : ज्ञान मत्तु आयु: पदरूपि चिंतने माडिदवरिगू ज्ञान मत्तु आयु: प्रदनागिद्दने - आ भगवद्रूपगळिगे नमॊनम:

अभ्रनामक - वासुदॆव - वासुदॆव - धूम

"अपांभरणात्" - नीरन्न तुंबिकोंडिरिवंतहवनु
व्याप्ति : मॆघ
व्यापर - धूमनागि - अज्ञान नाशमाडुत्ताने. आ भगवद्रूपक्के नमॊनम:

विद्युनामक - वासुदॆव - संकर्षण - अर्चि (ज्वाले)
व्याप्ति - विद्युत्तिनल्लि (मिंचु)
व्यापार - एल्लवन्नु तॊरिकोडुत्ताने
वासुदॆव - संकर्षण रूपगळिगे नमॊनम:

अशनिनामक वासुदॆव - प्रद्युम्न - अंगार
व्याप्ति : सिडिलु
व्यापर : "अशनात् " - सर्व भक्षकनागिद्दाने. (नम्म पापगळन्नेल्ला भक्षिसिबिडुत्ताने) वासुदॆव - प्रद्युम्न रूपगळिगे नमॊनम:

ह्रादुनिनामक - वासुदॆव - अनिरुद्ध - विस्पुलिंग (किडि)
व्याप्ति - मॆघ (नम्म शत्रुगळन्न गर्जिसि ऒडिसुत्ताने)
व्यापर - "निर्ह्रादनात्" गर्जने माडुववनु
वासुदॆव - अनिरुद्ध भगवद्रूपगळिगे नमॊनम:

ई रीति वासुदॆवनामक एरडनॆ अग्नियल्लि हॊमिसि अनंतर वृष्ठिद्वार मूरनॆ अग्नियल्लि हॊमिसुत्तारे

३ वृष्ठिद्वार ३नॆ अग्नि - पृथ्वि - संकर्षण
"प्रथनात्" - विस्तारवागि व्यापिसिद्दाने - संवत्सर नामक - संकर्षण - नारायण - समित्तु
व्याप्ति - संवत्सरदल्लि
व्यापार - "सम्यग्वासयतीति" - चेन्नागि बदुकुवंते माडुत्ताने. भक्तरन्न क्रीडादिगळिंद संतॊषपडिसुत्ताने. ई भगवद्रूपगळिगे नमॊनम:

आकाशनामक - संकर्षण - वासुदॆव - धूम
व्याप्ति = आकाशदल्लि
व्यापार = "प्रकाशनात्" - एल्लरन्नू प्रकाशगॊळिसुत्ताने. ई भगवद्रूपक्के नमॊनम:

रात्रिनामक - संकर्षण - संकर्षण - अर्चि
व्याप्ति - रात्रियल्लि
व्यापार = "रतिदानात्" - सुख कॊडुवुदरिंद रात्रि एंदु हेसरु. ई भगवद्रूपगळिगे नमॊनम:

दिङ् नामक - संकर्षण - प्रद्युम्न - अंगार
व्याप्ति - दिक्कुगळल्लि
व्यापार - "मॊक्षादिकं मुख्य पुरुशार्थान् दिशतीति" - मॊक्षवन्नु कॊडुत्तानाद्दरिंद

अवांतर दिङ्नामक - संकर्षण - अनिरुद्द्ध - विस्पुलिंग(किडि)
व्याप्ति - अवांतर दिक्कुगळल्लि
व्यापार - अपर तत्वगळन्नु उपदॆशिसुत्ताने "स्वर्गादिकं अवांतरं दिशतीति". ई रीति संकर्षणनॆंब मूरने अग्नियल्लि हॊमिसि अन्नद्वार नाल्कने अग्नियल्लि हॊम. अन्नद मूलक पुरुषनॆंब प्रद्युम्नाग्नियल्लि हॊम.

पुरुषनामक प्रद्युम्न (तंदॆ)
"पुरुत्वात् - पूर्णत्वात्"
वाङ् नामक - प्रद्युम्न - नारायण - समित्तु
व्याप्ति - वाक्किनल्लिरुवव
व्यापार - मातनाडुववनु

प्राणनामक - प्रद्युम्न - वासुदॆव - धूम
व्याप्ति - प्राणनल्लि

व्यापार- चॆष्टे माडिसुत्ताने. "संकर्षणात्" - प्राणगळन्नु हिडिदु निल्लिसुवदरिंद

जिह्वानामक - प्रद्युम्न- संकर्षण - अर्चि (ज्वाले)
व्याप्ति - जिह्वा
व्यापार - एल्लवू इवनोळगे हॊम माडल्पडुत्ते "हूयतॆ अस्मिन् इति"

चक्षुर्नामक - प्रद्युम्न - प्रद्युम्न - अंगार
व्याप्ति - चक्षुस्
व्यापार - तानु नॊडि नमगे नॊडिसुवुदरिंद " दर्शनात्"

शौत्रनामक - प्रद्युम्न - अनिरुद्ध - विस्पुलिंग
व्याप्ति - श्रौत्र
व्यापार - तानु कॆळि नमगे कॆळिसुवुदरिंद " श्रवणात्".
ई रीति प्रद्युम्ननेंब नाल्कनॆ अग्नियल्लि हॊमिसि - रॆतॊद्वारा पंचमाग्नियल्लि हॊम

यॊशानामक - अनिरुद्धनॆ - अग्नि (तायि)
"ज्यॊष्यत्वात्", भॊग्यत्वात् " - सॆविसल्पडलु यॊग्य मत्तु भॊगयॊग्य

यॊशा - संतॊषकोडुत्तानाद्दरिंद.

उपस्थनामक - अनिरुद्ध - नारायण - समित्तु
व्याप्ति - उपस्थ - नम्म हत्तिर इरुवुदरिंद
व्यापार - उपस्थदल्लिरुव (गुह्यॆंद्रियगत) " उपसमीपॆ स्थितत्वात्"

उपमंत्रणनामक - अनिरुद्ध - वासुदॆव - धूमवु
व्याप्ति - उपमंत्र
व्यापार - आया कालद मातुगळन्नु होरडिसुवुदरिंद " उपमंत्रण कर्तृत्वात्"

यॊनिनामक - अनिरुद्ध - संकर्षण - अर्चि
व्याप्ति - यॊनि
व्यापार - नमन्नु आनंददिंद मिश्रमाडुत्ताने. "युनक्ति मिश्री करॊति" - श्लुक्ल शॊणितवेरडन्नु मिश्रण माडुत्ताने

अंत:करण नामक - अनिरुद्ध - प्रद्युम्न - अंगार
व्याप्ति - अंत:करण
व्यापार - ओळगे नडेयुव क्रियगे कर्तृ " यॊन्यंत: क्रियमाण व्यापार कर्तृत्वात्"

अभिनंदन नामक - अनिरुद्ध - अनिरुद्ध - विस्पुलिंग (किडि)
व्याप्ति - अभिनंदनदल्लि
व्यापार - चेन्नागि नम्मन्नु संतॊषगोळिसुत्ताने " अभिनंदयतीति"
ई रीति क्रमवागि पंचाग्नियल्लि हॊमानंतरदल्लि जीवनिगे
पुरुषब्धितवाद दॆहवु बरुत्तदे.

अनुसंधान
ऐदु अग्नियल्लि हॊम माडिद मॆले दॆहप्राप्ति - आया
अग्निगळल्लि दॆवतेगळ मूलक नन्ननॆ हॊममाडुवाग प्रकटवाद
निन्न अनॆक रूपगळु - हॊम पदार्थवाद निन्न अनॆक रूपगळु -
हॊम पदार्थवाद नन्नल्लि दॆवतेगळ मंत्रगळल्लि - क्रियेगळल्लि -
अनुसंधानगळल्लि प्रकटवाद निन्न अद्भुत - अपूर्व - अनंत
रूपगळु - बंद मूरुति निनगे अर्पित - अदेल्ला निन्न पूजेयागलि
हरियॆ. ई जन्मदल्लि कळेद दिनगळल्लि - हागू हिंदे कळेद एल्ला
जन्मगळल्लि हागू मुंदे कळेयुव एल्ला जन्मगळल्लि नमगे दॆह
कोडलिक्के नीनु अल्लल्लि प्रकट माडिद निन्न रूपगळु यज्ञत्वॆन
निनगे अर्पितवागलि हरियॆ. नन्न सुत्तलू इरुव अर्पणे
माडिकोळ्ळद - क्रम गोत्तिल्लद सकल मुक्तियॊग्यराद जीवरल्लि
नीनु नडेसिद ई यज्ञदल्लि प्रकटवाद निन्न रूपगळु यज्ञत्वॆन
निनगे अर्पित हरियॆ

उपनयन प्रकरण

१. गायत्रिमंत्रदोळगिरुव "गायत्रि" नामकनाद अनंत सूर्यप्रभावनाद स्त्रीरूपि हयग्रीव - निनगे नमॊनम:

२. "भूत"" - पूर्णनादुदरिंद एल्ला चॆतन मत्तु अचॆतनगळल्लि ओळगे निंतु नियामन माडुव पूर्णनाद्दरिंद "भूत" एंदु करेसिकोळुत्ताने - निनगे नमॊनम:

३. एल्लर नालिगेयल्लि निंतु "वाक्" एंब हेसरिनिंदिरुव स्त्रीरूपि हयग्रीव - हॆ भगवंत निनगे नमॊ नम:

४. भूमियोळगे "पृथिवि" एंदु करेसिकोंड स्त्री रूपि हयग्रीव - हळदि बण्णदव - निनगे नमॊनम:

५. समस्त पदार्थगळिगे आधारवाद जीवन सुत्तू व्यापिसिरुवंते "शरीर" एंदु करेसिकोळ्ळुव विराट् रूपि - निनगे नमॊ नम:

६. एल्ला इंद्रियगळल्लि - ५ प्राणगळल्लि आधारवाद " हृदय" एंदु करेसिकोंड जीवर हृदयदोळगिरुव रूप - "हृदय" - निनगे नमॊ नम:

अनुसंधान
जगत्तिगे यावनु हुट्टुवुदर मूलक "सविता" अंदु करेसिकोंडिद्दानॊ - क्रीडादि गुणगळन्नु हॊंदिद्दरिंद दॆव एंदु करेसिकोंडिद्दाने - यावनु नम्मन्नु मॊक्षद कडेगे होत्तुकोंडु - करेदुकोंडु हॊगुत्ता "भर्ग" एंदु करेसिकोळ्ळुत्तानॊ अंथ सूर्य मंडल मध्यवर्तियाद नारायणन श्रॆष्ठवाद - सर्वत्रव्याप्तनाद चिंतने माडलॆ बॆकाद नम्म बुद्धियन्नु अवन कडेगॆ प्रॆरणे माडुवंतह अद्भुत रूपवन्नु चिंतने माडुवेवु

हागे ८ दिक्कुगळ दॆवतगळल्लि प्रार्थने :
निम्मनिम्म दिक्कुगळिगे बंदाग नम्मन्नु दॆवर चिंतने हाळागदंते कापाडि. निमगे नामोनम: